UP Board Notes Class 7 Sanskrit chapter 3 अभिलाषा

शब्दार्थाः- दयादृष्टिः = कृपापूर्ण भाव, देया = देना चाहिए, जातु = कदाचित् (कभी), नो = नहीं, हेया = छोड़े, जाताः = हो गए हैं, इदानीं = इस समय, मूढ़ता = अज्ञानता, द्रुतम् = शीघ्र, नेया = ले जानी चाहिए, त्वदुपदेशामृतम् = तुम्हारे उपदेशरूपी अमृत को, त्यक्त्वा = छोड़कर, विपन्नः = दुखी, हन्त = खेद है, बूमहे = कहें, गेया = गाई जानी चाहिए, स्वीयाः = अपने, विनीतप्रार्थनैकेयम् = विनम्र प्रार्थना एक यह।

दयामय ..... नो हेया ॥1॥

हिन्दी अनुवाद – हे दयामय! देव! दीन-दुखियों पर सदा दयादृष्टि (कृपा) रखें। निर्बलों, असहायों की रक्षा का वचन कभी न तोड़े।

मनुष्या ..... त्वचा नेया ॥2॥

हिन्दी अनुवाद – मानव आजकल दानव बन चुका है, इसलिए देश को अज्ञानता से बचाना चाहिए।

त्वदुपदेशामृतं ..... पुनर्गेया ॥3॥

हिन्दी अनुवाद – खेद है कि तुम्हारा उपदेशरूपी अमृत त्यागकर लोग इस संसार में दुखी बने । हुए हैं। इनके उद्धार के लिए एकबार फिर गीता गाई जानी चाहिए।

किमधिकं ..... विस्मृतिं नेया ॥4॥

हिन्दी अनुवाद – हे भगवान! आपसे और क्या विनय करें; बसे इतनी प्रार्थना है कि हम सब आप ही के बच्चे हैं; हमें भूलिएगा नहीं।

https://www.evidyarthi.in/